अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठीः ज्ञान पुनर्जागरणः उच्च शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान का नवाचार

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक समृद्ध बौद्धिक विरासतों में से एक है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक, इस परंपरा ने मानव सभ्यता के विकास में अप्रतिम योगदान दिया है। आज जब हम वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के युग में खड़े हैं, तब स्वदेशी ज्ञान की प्रासंगिकता और उसके नवाचार की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। इसी संदर्भ में हिन्दुस्तानी एकेडमी उत्तर प्रदेश, प्रयागराज, अर्थशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाराबंकी और प्रज्ञा प्रवाह के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 29–30 नवंबर, 2025 को किया गया।

संगोष्ठी का उद्देश्य और महत्व

ज्ञान पुनर्जागरणः उच्च शिक्षा में स्वदेशी ज्ञान का नवाचार विषय पर केंद्रित यह अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी न केवल भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करने का प्रयास थी, बल्कि समकालीन शैक्षिक व्यवस्था में इसके समावेशन और नवाचार की दिशा में एक सार्थक पहल भी थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) ने भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) को उच्च शिक्षा में समाहित करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस संगोष्ठी का प्रारंभिक उद्देश्य यह था कि कैसे हम अपनी प्राचीन ज्ञान परंपरा को आधुनिक शैक्षिक पाठ्यक्रमों में प्रभावी रूप से एकीकृत कर सकें और इसके माध्यम से नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए वैश्विक नागरिक बना सकें।

संगोष्ठी की संरचना और विषय-वस्तु

यह संगोष्ठी हाइब्रिड मोड (Offline&Online दोनों मोड) में आयोजित की गई, जिसमें देश-विदेश के विद्वानों, शोधार्थियों, शिक्षाविदों और नीति-निर्माताओं ने भागीदारी की। संगोष्ठी को विभिन्न तकनीकी सत्रों में विभाजित किया गया था, जिनमें भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयामों पर गहन विमर्श हुआ।

प्रथम दिवस के मुख्य विषय

संगोष्ठी के प्रथम दिवस में भारतीय ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और उसके विकास-क्रम पर प्रकाश डाला गया।

वैदिक काल से आधुनिक काल तकः भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक विकास विषय ने यह स्पष्ट किया कि कैसे हमारी ज्ञान परंपरा ने विभिन्न कालखंडों में परिवर्तन और विकास के दौर से गुजरते हुए भी अपनी मूल प्रकृति को बनाए रखा है। चतुर्विद्या और चतु:षष्टि कलाः प्राचीन भारतीय ज्ञान का वर्गीकरण विषय पर हुई चर्चा ने यह दर्शाया कि प्राचीन भारत में ज्ञान का कितना व्यवस्थित और वैज्ञानिक वर्गीकरण था। चौदह विद्याओं और चौंसठ कलाओं का यह विभाजन न केवल शिक्षा की व्यापकता को प्रदर्शित करता है, बल्कि समग्र व्यक्तित्व विकास की भारतीय अवधारणा को भी रेखांकित करता है।

गुरुकुल से विश्वविद्यालयः भारतीय शिक्षा प्रणाली का कालिक विकासष विषय ने शिक्षा पद्धति के विकास-क्रम को प्रस्तुत किया। गुरु-शिष्य परंपरा से लेकर नालंदा, तक्षशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालयों तक की यात्रा और फिर आधुनिक शैक्षिक संस्थानों के उदय ने भारतीय शिक्षा के परिवर्तनशील स्वरूप को उजागर किया।

गणित और खगोल विज्ञान में भारत के योगदान को रेखांकित करते हुए शून्य से अनंत तकः भारतीय गणित और खगोल विज्ञान की वैश्विक देन विषय पर विशेष बल दिया गया। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य जैसे महान गणितज्ञों और खगोलविदों की उपलब्धियों ने विश्व के गणितीय और खगोलीय ज्ञान को नई दिशा दी।

आयुर्वेद से न्यूरोसाइंस तकः पारंपरिक चिकित्सा का आधुनिक अनुप्रयोग विषय ने यह स्थापित किया कि कैसे प्राचीन चिकित्सा पद्धतियाँ आज भी प्रासंगिक हैं और आधुनिक विज्ञान उनकी प्रभावशीलता को प्रमाणित कर रहा है।

समानांतर सत्रों में अर्थशास्त्र, राजनीति, समाजशास्त्र और पर्यावरण जैसे विषयों पर चर्चा हुई। कौटिल्य के अर्थशास्त्र से आधुनिक अर्थनीति तकः भारतीय आर्थिक चिंतन ने यह दर्शाया कि चाणक्य का अर्थशास्त्र आज भी आर्थिक नीति-निर्माण में कितना प्रासंगिक है।

पंचायती राज और सहकारिताः भारतीय लोकतंत्र के मूल तत्व विषय ने भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की जड़ों को खोजा।

धर्म, अर्थ, काम, मोक्षः भारतीय जीवन दर्शन और समाजशास्त्र ने पुरुषार्थ चतुष्टय के माध्यम से संतुलित जीवन की भारतीय अवधारणा को प्रस्तुत किया।

राजधर्म और न्याय व्यवस्थाः प्राचीन भारतीय राजनीतिक सिद्धांत तथा जलवायु परिवर्तन और पारंपरिक पारिस्थितिकी ज्ञान जैसे विषयों ने समकालीन चुनौतियों के समाधान में भारतीय ज्ञान

की उपयोगिता को रेखांकित किया।

द्वितीय दिवस के मुख्य विषय

संगोष्ठी के दूसरे दिन ष्योग, ध्यान और मानसिक स्वास्थ्य: आधुनिक न्यूरोसाइंस की दृष्टि विषय पर गहन विमर्श हुआ। आधुनिक शोध यह सिद्ध कर रहे हैं कि योग और ध्यान मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। सतत विकास और भारतीय कृषि परंपरा: जैविक खेती से परमाकल्चर तक विषय ने पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ विकास में पारंपरिक कृषि पद्धतियों की भूमिका को प्रस्तुत किया।

NEP 2020 और IKS उच्च शिक्षा में पाठ्यक्रम एकीकरण रणनीति अत्यंत महत्वपूर्ण विषयों में से एक रहा, जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में भारतीय ज्ञान प्रणाली को पाठ्यक्रम में समाहित करने की व्यावहारिक रणनीतियों पर चर्चा हुई।

डिजिटल युग में पारंपरिक ज्ञान संरक्षण: तकनीकी नवाचार और चुनौतियाँ विषय ने यह स्पष्ट किया कि कैसे डिजिटल तकनीक के माध्यम से हम अपनी मौखिक परंपरा और प्राचीन ग्रंथों को संरक्षित कर सकते हैं।

बौद्धिक संपदा और पारंपरिक ज्ञान अधिकार: कानूनी और नैतिक आयाम पर हुई चर्चा अत्यंत प्रासंगिक रही। हल्दी, नीम और योगासन जैसे भारतीय पारंपरिक ज्ञान पर पश्चिमी देशों द्वारा पेटेंट के प्रयास इस विषय की महत्ता को दर्शाते हैं।

समानांतर सत्र में वसुधैव कुटुम्बकम भारतीय ज्ञान प्रणाली का वैश्विक नेतृत्व ने यह प्रतिपादित किया कि कैसे भारतीय दर्शन विश्व को एक परिवार मानते हुए सार्वभौमिक कल्याण की बात करता है।

पश्चिमी बनाम भारतीय अनुसंधान पद्धति: एक तुलनात्मक विश्लेषण ने यह स्पष्ट किया कि भारतीय अनुसंधान पद्धति केवल भौतिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और अनुभूतिजन्य भी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में नारी शक्ति: गार्गी से आधुनिक महिला वैज्ञानिक तक विषय ने यह दर्शाया कि भारतीय इतिहास में महिलाओं को ज्ञान और शिक्षा में सदैव सम्मानजनक स्थान प्राप्त रहा है।

संगोष्ठी की उपलब्धियाँ और सिफारिशें

इस द्वि-दिवसीय संगोष्ठी में 100 से अधिक शोधपत्र प्रस्तुत किए गए, जिनमें भारतीय ज्ञान परंपरा के विभिन्न पहलुओं पर गहन शोध प्रस्तुत किया गया।

विद्वानों ने निम्नलिखित महत्वपूर्ण सिफारिशें कीं:

1. उच्च शिक्षा में भारतीय ज्ञान प्रणाली को अनिवार्य रूप से पाठ्यक्रम में समाहित किया जाए
2. पारंपरिक ज्ञान के डिजिटल संरक्षण के लिए राष्ट्रीय स्तर का डेटाबेस बनाया जाए
3. भारतीय और पश्चिमी ज्ञान पद्धतियों के बीच संवाद और समन्वय स्थापित किया जाए
4. पारंपरिक ज्ञान के बौद्धिक संपदा अधिकारों की सुरक्षा के लिए कानूनी ढांचा मजबूत किया जाए
5. अंतर-विषयक शोध को प्रोत्साहित किया जाए जो प्राचीन ज्ञान और आधुनिक विज्ञान को जोड़े

निष्कर्ष और भावी दिशा

इस द्वि-दिवसीय संगोष्ठी में देश-विदेश के लगभग 100 से अधिक शोधार्थियों, प्राध्यापकों और विद्वानों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। जापान के ओसाका विश्वविद्यालय, नॉर्वे और लद्दाख विश्वविद्यालय से आए विद्वानों की उपस्थिति ने संगोष्ठी को वास्तव में अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया। श्री हृदय नारायण दीक्षित (पूर्व अध्यक्ष, विधानसभा, उत्तर प्रदेश), अस्वस्थता के कारण संगोष्ठी में उपस्थित नहीं हो सके परंतु उन्होंने विचारों को प्रेषित किया था, जिसका संगोष्ठी में वाचन कर सभी को उनके विचारों से अवगत कराया गया। वहीं दूसरी ओर, डॉ. बिजेंद्र सिंह (कुलपति, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय), प्रो. योगेंद्र प्रताप सिंह, हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज, प्रो. अजीत सिंह, सचिव, हिन्दुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज और अन्य विशिष्ट व्यक्तित्वों की उपस्थिति ने संगोष्ठी को गरिमा प्रदान की।

इस प्रकार, यह संगोष्ठी भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्जागरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई। इससे यह स्पष्ट हुआ कि हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा न केवल ऐतिहासिक महत्व की है, बल्कि समकालीन चुनौतियों के समाधान में भी अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में यह संगोष्ठी शैक्षिक संस्थानों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगी। संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्रों और विचारों से यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय ज्ञान परंपरा को उच्च शिक्षा में समाहित करना केवल सांस्कृतिक आवश्यकता नहीं, बल्कि शैक्षिक उत्कृष्टता और समग्र विकास की दिशा में आवश्यक कदम है। यह संगोष्ठी उन सभी के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी जो भारतीय ज्ञान परंपरा के

संरक्षण, संवर्धन और आधुनिकीकरण के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम आशान्वित हैं कि इस संगोष्ठी के माध्यम से जो विचार-विमर्श हुआ है, वह आने वाले समय में नीति-निर्माण और शैक्षिक पाठ्यक्रम निर्धारण में सहायक होगा। यह संगोष्ठी न केवल विचारों के आदान-प्रदान का मंच बनी, बल्कि एक नवीन दृष्टिकोण और कार्ययोजना विकसित करने का माध्यम भी बनी। अंत में, हम हिन्दुस्तानी एकेडमी उत्तर प्रदेश, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाराबंकी के प्रबंधन, प्रज्ञा प्रवाह तथा सभी सहभागियों, वक्ताओं और शोधार्थियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग से यह संगोष्ठी सफलतापूर्वक संपन्न हो सकी।

डॉ. अर्चना सिंह
संयोजक,
अर्थशास्त्र विभाग
जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, बाराबंकी